धन्य हैं वे मरे जो प्रभु में मरते हैं

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रकाशितवाक्य 14:13 (Hindi Bible -ERV):
“और मैंने स्वर्ग से यह शब्द कहती हुई एक आवाज़ सुनी: “लिख: अब से
जो लोग प्रभु में मरते हैं वे धन्य हैं।” हाँ, आत्मा कहता है कि वे अपनी मेहनत से विश्राम पाएंगे क्योंकि उनके काम उनके साथ चलते
हैं।”

बाइबिल यह नहीं कहती कि “धन्य हैं वे जो मरते हैं”—बल्कि यह कहती है, “धन्य हैं वे मरे जो प्रभु में मरते हैं।”
यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। हर मृत्यु धन्य नहीं होती। केवल वही व्यक्ति धन्य कहलाता है जो मसीह में मरता है—जिसने यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार किया हो, जो अनुग्रह में बना रहा हो, और जिसने विश्वास में जीवन व्यतीत किया हो।

जो मसीह के बिना मरते हैं, उनके लिए यह एक चेतावनी है। वहाँ आशीष नहीं है, बल्कि नाश और न्याय है।

यूहन्ना 5:29 कहता है:
“जो भलाई करते हैं वे जीवन के लिए जी उठेंगे, परन्तु जो बुराई करते हैं वे दण्ड के लिए जी उठेंगे।”

धन्य हैं वे मरे जो प्रभु में मरते हैं

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

मृत्यु के बाद कुछ है—कोई शून्यता नहीं है, बल्कि न्याय और अनंत गंतव्य।
जो मसीह में मरते हैं, उनके लिए मृत्यु अंत नहीं है—बल्कि वास्तविक विश्राम की शुरुआत है, परमेश्वर की उपस्थिति में।
इसलिए आत्मा कहता है कि वे “धन्य” हैं।
अगर मृत्यु के बाद कुछ नहीं होता, तो बाइबिल कहती, “धन्य हैं जीवित”—लेकिन ऐसा नहीं लिखा।

तो अब मैं तुमसे पूछता हूँ:
क्या तुम्हारा जीवन प्रभु के सामने सही स्थिति में है?
अगर आज ही तुम्हारी मृत्यु हो जाए, तो क्या तुम उन “धन्य लोगों” में गिने जाओगे जो प्रभु में मरते हैं?

इसका उत्तर केवल तुम्हारे शब्दों से नहीं, बल्कि तुम्हारे जीवन और कामों से मिलेगा।
प्रकाशितवाक्य 14:13 कहता है: “…क्योंकि उनके काम उनके साथ चलते हैं।”

घर, गाड़ियाँ, धन-दौलत—ये सब यहीं रह जाएंगे।
लेकिन तुम्हारे कर्म और विश्वास का जीवन, वे तुम्हारे साथ “उस पार” जाएंगे।
हमें बचाने वाला केवल मसीह है, परंतु हमारे काम हमारे विश्वास का प्रमाण हैं।

धन्य हैं वे मरे जो प्रभु में मरते हैं

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

याकूब 2:17 कहता है:
“वैसे ही विश्वास भी, यदि उस में कर्म न हों, तो अपने आप में मरा
हुआ है।”

मृत्यु के बाद दूसरा अवसर नहीं मिलेगा।
अब समय है प्रभु यीशु की ओर पूरी तरह लौटने का।
वह ही हमारा शरणस्थान और एकमात्र आशा है।

इब्रानियों 9:27 (ERV):
“मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय होना नियुक्त है।”

प्रेरितों के काम 4:12:
“उद्धार किसी और में नहीं है, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को कोई और नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।”

मारनाथा – प्रभु आ रहा है!

धन्य हैं वे मरे जो प्रभु में मरते हैं

Share on:
WhatsApp

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4